International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

बाला किले का इतिहास

Pawan Kumar

Assistant Professor, History, Babu Shobha Ram College, Alwar, Rajasthan, India

सार

बाला किला अलवर जिले में अवस्थित प्राचीन दुर्ग हैं। इस दुर्ग को कुंवारा दुर्ग ,अलवर दुर्ग भी बोला जाता है।यह दुर्ग अरावली की पहाड़ियों पर लगभग 300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।, जो कि 5 किलोमीटर की दूरी तक फैली हुई है। किले में 6 प्रवेश द्वार हैं और पोल के नाम से जाना जाता है। किले के 6 द्वार चांद पोल, सूरज पोल(महाराजा सूरजमल ने बनवाया), कृष्ण पोल, लक्ष्मण पोल, अंधेरी गेट और जय पोल हैं। इन दरवाजो में से प्रत्येक का नाम कुछ शासकों के नाम पर रखा गया है। बाला के दुर्ग के निर्माताओं के बारे इतिहासकार एकमत नही है। कुछ इसे शिल्प जाति द्वारा तो कुछ इसे निकुम्भ द्वारा,कुछ इस हसन खान मेवाती द्वारा निर्मित मानते हैं। यह किला 1545 ईस्वी तक 1755 ईस्वी मुगलो के अधीन रहा था। इसके बाद भरतपुर के जाट राजाओ ने इस पर अधिकार कर लिया था। महाराजा सूरजमल ने दुर्ग में सूरज कुण्ड ,सूरज पोल और दो महलों का निर्माण करवाया था। सन 1775 ईस्वी में भरतपुर की शरण मे आये नरुका प्रताप सिंह ने नवीन वंश की स्थापना की थी।

परिचय

सिटी पैलैस परिसर अलवर के पूर्वी छोर की शान है। इसके पर अरावली की पहाडियां है और इन पहाडियों पर बाल किला बना हुआ है। किले की दीवार पूरी पहाडी पर फैली हुई है जो हरे-भरे मैदानों से गुजरती है। पूरे अलवर शहर में यह सबसे पुरानी इमारत हे! बाला किला जिसे अलवर किले के नाम से भी जाना जाता है, अलवर शहर में छंद की पहाड़ी पर स्थित है। इस किले का निर्माण 1492 में हसन खान मेवाती ने करवाया था। यह स्मारक अपने चिनाई के माक और भव्य संरचनात्मक डिज़ाइन के लिए प्रसिद्द है। दरार हॉल में अब अलवर पुलिस का वायरलैस केन्द्र है। अन्तर्राज्यीय बस अड्डे से यहां तक आना एक सुखद अनुभव है। पूरा सडक मार्ग अच्छे से बना हुआ है। इसके दोनों तरफ छायादार पेड लगे हुए हैं। रास्ते में पत्थरों की बनी दीवारें दिखाई देती हैं जो बहुत ही सुन्दर हैं। किले में जयपोल के रास्ते प्रवेश किया जा सकता है। यह सुबह 6 बजे से शाम 7 बजे तक खुला रहता है। कर्णी माता के मंदिर का रास्ता यहीं से होकर जाता है और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए यह मंगलवार और शनिवार की रात को 9 बजे तक खुला रहता है। किले में प्रवेश करने के लिए आ पुलिस सुपरिटेण्डेन्ट की अनुमति की आवश्यकता नहीं पडती। पर्यटकों को केवल संतरी के पास रखे रजिस्टर में अपना नाम लिखना होता है। इसके बाद वह किले में घूम सकते हैं। आपातकाल के समय आप पर्यटक सुपरिटेण्डेन्ट के कार्यालय में फोन कर सकते हैं।[1]

बाला किला जिसे अलवर किला भी कहा जाता है, भारत के राजस्थान राज्य के अलवर में एक किला है । [1] यह अलवर शहर के ऊपर अरावली पर्वत श्रृंखला में एक पहाड़ी पर स्थित है । [2] किला 5 किलोमीटर (3.1 मील) लंबा और लगभग 1.5 किलोमीटर (0.93 मील) चौड़ा है। किले का निर्माण मूल रूप से 928 ईस्वी में निकुंभ राजपूतों द्वारा किया गया था। 1492 में खानजादा अलावल खान ने मानव बलि की प्रथा को रोकने के लिए निकुंभ राजपूतों से बाला किला जीता । निकुंभ राजपूत और उनके उत्तराधिकारी बड़ौदा के माध्यम से भारत के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से में चले गए और पूर्वी खानदेश में बस गए15वीं शताब्दी के दौरान मुगलों के कारण मुगल साम्राज्य का पश्चिमी भारत और उसके आसपास विस्तार हो रहा था, जिसका कारण उस समय राजधानी दिल्ली से इसकी निकटता थी। इसका पुनर्निर्माण 1521 ई. में हसन खान मेवाती ने करवाया था । [3] बाद की शताब्दियों में यह मुगलों के पास चला गया । इस पर जाट शासक सूरजमल ने कब्ज़ा कर लिया था । हालाँकि उनकी मृत्यु के बाद इस पर अलवर राज्य के राजपूत शासक महाराव राजा प्रताप सिंह ने कब्ज़ा कर लिया. नर्मदा, तापी, गिरना जैसी प्रमुख नदियाँ निकुंभ राजपूत योद्धाओं के बसने के लिए उपयुक्त थीं। चूंकि इसमें खेती के लिए पर्याप्त पानी और जमीन होने के कारण राजपूतों ने इसे अपने उत्तराधिकारियों के लिए उपयुक्त स्थान के रूप में पाया। अरवाली पर्वत श्रृंखला मेवाड मेवाड और मारवा मारवाड को विभाजित करती है।

शिरपुर, धुले, तापी और गिरना नदियाँ, और नदी के तट के साथ-साथ सतपुतदा पर्वत और पीतलखोरा तक जहाँ उन्होंने अपना साम्राज्य बनाया। प्राचीन शिव मंदिर की स्थापना, जो आज पीतलखोरा गुफाओं की घाटी और पटना देवी टुडे के निकट नदी के किनारे स्थित है। निकुंभ राजपूत . स्थानांतरित होकर उंदिरखेड़ा के पास गिरना बैंक बेसिन तक और कुछ आज के गौताला अभयारण्य के पास रंजनगांव तक विस्तारित हुआ।

कछवाहा राजपूत बाद में वारखेड़ा और उम्बरखेड़ा में आज के खानदेश की गिरना नदी के किनारे और घाटियों में बस गए। आज के मेहुनबारा के पास, वारखेड़ा में कछवाहा में पवार परमार राजपूत । निकुंभ राजपूत .उंदिरखेड़ा और रंजनगांव और पटना से

पिंपलगांव तक सतपुड़ा पर्वतमाला में थे। बाद में, वह क्षेत्र विस्तारित मराठा साम्राज्य का हिस्सा बन गया और मराठा साम्राज्य के तहत पेशवा शासन के दौरान इस क्षेत्र को वतनदार के रूप में नामित किया गया था ।[2]

विचार-विमर्श

किले के भीतर 15 बड़े और 51 छोटे टावर हैं, जो शहर से 340 मीटर (1,120 फीट) ऊपर पहाड़ी पर स्थित हैं। किले में बंदूक चलाने के लिए 446 खुले स्थान थे , साथ ही इसके चारों ओर 8 विशाल बुर्ज भी थे। सिटी पैलेस परिसर अलवर के पूर्वी छोर की शान है। इसके ऊपर अरावली की पहाड़ियाँ हैं, जिन पर बाला किला बना है। बाला किले की दीवार पूरी पहाड़ी पर फैली हुई है जो हरे-भरे मैदानों से गुजरती है। पूरे अलवर नगर में यह सबसे पुरानी इमारत है, जो लगभग ९२८ ई० में निकुम्भ राजपूतों द्वारा बनाई गई थी। अब इस किले में देख नहीं सकते, क्योंकि इसमे पुलिस का वायरलैस केन्द्र है। अलवर अन्तर्राज्यीय बस अड्डे से यहां तक अच्छा सड़क मार्ग है। दोनों तरफ छायादार पेड़ लगे हैं। रास्ते में पत्थरों की दीवारें दिखाई देती हैं, जो बहुत ही सुन्दर हैं। किले में जयपोल के रास्ते प्रवेश किया जा सकता है। यह सुबह ६ बजे से शाम ७ बजे तक खुला रहता है। कर्णी माता का मंदिर इसी के रास्ते में है और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए यह मंगलवार और शनिवार की रात को ९ बजे तक खुला रहता है। किले में प्रवेश करने के लिए तब पुलिस सुपरिटेण्डेन्ट की अनुमति की आवश्यकता नहीं पडती। पर्यटकों को केवल संतरी के पास रखे रजिस्टर में अपना नाम लिखना होता है। इसके बाद वह किले में घूम सकते हैं। आपातकाल के समय आप पर्यटक सुपरिटेण्डेन्ट के कार्यालय में फोन कर सकते हैं।

परिणाम

यह किला 1545 ईस्वी तक 1755 ईस्वी मुगलो के अधीन रहा था। इसके बाद भरतपुर के जाट राजाओ ने इस पर अधिकार कर लिया था। महाराजा सूरजमल ने दुर्ग में सूरज कुण्ड ,सूरज पोल और दो महलों का निर्माण करवाया था। सन 1775 ईस्वी में भरतपुर की शरण मे आये नरुका प्रताप सिंह ने नवीन वंश की स्थापना की थी। बाला किला भारत के राजस्थान राज्य के अलवर जिले में स्थित है, जिसे कुंवारा किला भी कहा जाता है। अरावली की पहाड़ियों में स्थित ये दुर्ग पहाड़ी पर है, जिसकी प्राचीर 5 किलोमीटर तक फैली है। बाला किला में 6 प्रवेश द्वारा है।[3]

बाला किला प्रवेश द्वार नाम

1. चांद पोल
2. सूरज पोल
3. कृष्ण पोल
4. लक्ष्मण पोल
5. अंधेरी गेट
6. जय पोल

गेटो का इतिहास भी अपना अलग अलग है कहा जाता है की सूरज पोल का निर्माण महाराजा सूरजमल ने करवाया था, इसलिए इसका नाम सूरज पोल पड़ा।

सामरिक महत्व से अलवर दुर्ग
किले में बंदूक से गोलियां चलाने के लिए 446 छिद्र बने हुए है। 15 बड़े टॉवर 51 छोटे टॉवर भी किले की सुरक्षा के लिए बनाए गए है। यह किला कभी भी आक्रमण ना होने वाले दुर्गों में गिना जाता है।[5]

बाला किला के निर्माता इतिहास
बाला किला का निर्माण हसन खां मेवाती ने किया और 1545 ई. से 1755 ई. तक ये किला मुगल शासकों के अधीन रहा। निकुंभ और शिल्प जाति को भी कुंवारा दुर्ग का निर्माता कहा जाता है।

कहा जाता है की बाद में बाला दुर्ग पर 1775 ई. राजपूत नरूका शासक प्रताप सिंह नरूका ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

मुगल शासक बाबर और जहांगीर ने भी इस किले में शरण ली है, कहा जाता है की बाबर ने किले में महज एक रात गुजारी थी, और जिस कमरे में मुगल शासक जहांगीर रुके उसे आज भी सलीम महल के नाम से जाना जाता है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 2, March 2020 |

निष्कर्ष

अलवर किला या बाला किला यह राजस्थान के अलवर शहर की पहाड़ी पर स्थित हैं. 1550 में हसन खान मेवाती ने इस बाला किले का निर्माण करवाया था. यह भव्य किला अपनी आकर्षक स्थापत्य कला और सुंदर डिजाइन के लिए देश भर में विख्यात हैं.जय पोल, लक्ष्मण पोल, सूरत पोल, चाँद पोल, अंधेरी द्वार और कृष्णा द्वार ये बाला किले के सभी ६ प्रवेश द्वारों के नाम है जिनसे होकर किले के अंदर प्रवेश किया जा सकता हैं. बाला किले का इतिहास रहस्य और इसके बारे में उपलब्ध जानकारी आपकों बता रहे हैं. किले के आकार व लम्बाई की बात की जाए तो अलवर का यह किला ५ किमी लम्बा तथा २ किमी की चौड़ाई में बना हुआ हैं. इस किले को सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए बनाया गया था. मुगल काल में बने इस किले पर कछवाहा राजपूतों के अधीन रहा. किले के ४४६ दीवार में छेद है जिनसे गोलिया चलाकर दुश्मन का सामना किया जाता था. किले में 15 बड़े टॉवर और 51 छोटे टॉवर इस भव्य स्मारक भी बने हुए हैं.राजा प्रतापसिंह ने 25 नवम्बर 1775 को बाला किला पर झंडा फहरा कर अलवर राज्य की स्थापना की थी. आज बाला किला जर्जर अवस्था में अपने इतिहास पर आंसू बहाने की हालत में हैं.पर्यटन विभाग ने इस किले के रखरखाव पर विशेष ध्यान न दिए जाने के कारण यह अब बुरे हालातों से गुजर रहा हैं.यदि एक बड़ा हवा का झौका या छोटा सा तूफ़ान भी आया तो यह अलवर का किला खंडहर का रूप ले लेगा. एक समय दुश्मनों के तोप गोलों के सामने अटल खड़ा रहने वाला किला अब लाचारी के हालात में पहुच गया है. अलवर का बाला किला अरावली पर्वतमाला की 1000 फीट ऊँची पहाड़ी पर बना हुआ हैं. जनश्रुति के अनुसार आमेर नरेश कांकिलदेव के पुत्र अलघुराय ने १०४९ ई में पहाड़ी पर किला बनाकर उसके निचे एक नहर बसाया जिसका नाम अलपुर रखा गया था.[7]

किले की प्राचीर ६ मील की परिधि में हैं. जिनमें 15 बड़ी बुर्जे तथा ५२ छोटी बुर्जे बनी हुई हैं. प्राचीर में शत्रु के गोले बरसाने के लिए छिद्र बने हुए हैं. किले की दूसरी रक्षापंक्ति के रूप में आठ बुर्ज हैं. जिनमें काबुल, खुर्द और नौगुजा बुर्ज प्रमुख हैं.

किले के प्रमुख प्रवेश द्वार पश्चिम में चांदपोल, पूर्व में सूरजपोल, दक्षिण में लक्ष्मणपोल और जयपोल है. उत्तर की ओर अँधेरी दरवाजा हैं. जहाँ दो पहाड़ियाँ होंने के कारण सूर्य का प्रकाश नहीं पहुचने के कारण अँधेरा रहता हैं.

खानवा के युद्ध में राणा सांगा की ओर से लड़ने वाला हंसन खां मेवाती यही का शासक बना था. खानवा विजय के बाद यह किला बाबर ने अपने पुत्र हिंदाल को दे दिया. 1775 ई से भारत की स्वाधीनता तक इस किले पर कछवाहों की नरुका शाखा का अधिकार रहा.

बाला किले के भीतर निकुम्भ शासकों द्वारा निर्मित महल परम्परागत हिन्दू स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं. इनके निर्माण में सामरिक सुरक्षा और रिहायशी सुविधाओं का समन्वय दिखलाई पड़ता हैं. सलीम सागर तालाब और सूरजकुंड किले के प्रमुख जल स्रोत हैं. किले में सीतारामजी का मन्दिर दर्शनीय हैं.[7]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "बाला किला (अलवर किला) अलवर, अलवरसिटी.कॉम- राजस्थान का टाइगर गेट"। अलवरसिटी डॉट कॉम। 13 मई 2014 को लिया गया .
2. ^ डांग 2005 .
3. ^ "बाला किला | अलवर किला - एक खूबसूरत ऐतिहासिक पर्यटक स्थल अलवर" ।
4. ^ "बाला किला अलवर" । अलवर जिले की आधिकारिक वेबसाइट। 11 जनवरी 2012 को मूल से संग्रहीत। 9 मई 2014 को पुनःप्राप्त .
5. Alwar-Rajasthan. "History|Alwar Rajasthan,Alwar-Rajasthan". alwar.rajasthan.gov.in (अंग्रेज़ी में). मूल से 4 जुलाई 2019 को पुरालेखित.
6. ↑ Alwar-Rajasthan. "History|Alwar Rajasthan,Alwar-Rajasthan". alwar.rajasthan.gov.in (अंग्रेज़ी में). मूल से 4 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2019
7. ↑ "जानिए अलवर के राजगढ़ का गौरवशाली इतिहास, आज हैं कुछ ऐसे हाल". Patrika News (hindi में). अभिगमन तिथि 2018-06-06.